Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 2 | (April – June 2026)

महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन: सिद्धांत और व्यवहारिकता का विश्लेषण

अमर बहादुर
शोधार्थी, दर्शनशास्त्र विभाग, डा० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

सारांश

यह शोध पत्र महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन के सिद्धांतों एवं उसकी व्यवहारिकता का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। गांधी जी ने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का साधन न मानकर व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का माध्यम माना है, जिसमें शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक तीनों आयामों का संतुलित विकास शामिल है। उनके शिक्षा दर्शन का प्रमुख आधार 'नई तालीम' है, जो कार्य-आधारित शिक्षा, आत्मनिर्भरता तथा नैतिक मूल्यों पर आधारित है। इस अध्ययन में गांधी जी के शिक्षा संबंधी विचारों जैसे- सत्य, अहिंसा, श्रम की गरिमा, मातृभाषा में शिक्षा तथा चरित्र निर्माण का विश्लेषण किया गया है। शोध में गुणात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए द्वितीयक स्रोतों, जैसे पुस्तकों, शोध पत्रों एवं सरकारी दस्तावेजों का अध्ययन किया गया है। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि गांधीवादी शिक्षा सिद्धांत व्यवहार में किस सीमा तक लागू किए जा सकते हैं। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि गांधी जी का शिक्षा दर्शन आज भी अत्यंत प्रासंगिक है, विशेषकर वर्तमान समय में जब शिक्षा अधिकतर परीक्षा और रोजगार तक सीमित हो गई है। नई शिक्षा नीति 2020 में भी गांधीवादी शिक्षा के तत्व, जैसे कौशल विकास, अनुभवात्मक अधिगम तथा मूल्य-आधारित शिक्षा, स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। हालांकि, आधुनिक तकनीकी युग में गांधीवादी शिक्षा के पूर्ण कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियाँ भी हैं, जैसे संसाधनों की कमी, पारंपरिक शिक्षा प्रणाली का प्रभुत्व तथा तकनीकी शिक्षा के साथ संतुलन की आवश्यकता। अतः यह कहा जा सकता है कि यदि गांधी जी के शिक्षा सिद्धांतों को समकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप संशोधित कर लागू किया जाए, तो यह शिक्षा प्रणाली को अधिक मानवीय, व्यावहारिक एवं प्रभावी बना सकता है।

मूलशब्दः सत्य, अहिंसा, स्वावलंबन, श्रम-प्रतिष्ठा, नैतिकता, चरित्र-निर्माण, आत्मनिर्भरता सर्वांगीण विकास, ग्राम-स्वराज, बुनियादी शिक्षा (नई तालीम), सहयोग, अनुशासन, सादगी, सेवा भाव, जीवनोपयोगी शिक्षा।

प्रस्तावना

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। उनके पिता करमचंद गांधी पोरबंदर रियासत के दीवान थे तथा माता पुतलीबाई धार्मिक एवं आदर्शवादी प्रवृत्ति की थीं। गांधी जी के जीवन पर उनकी माता के संस्कारों का गहरा प्रभाव पड़ा, जिससे उनमें सत्य, अहिंसा और नैतिकता के गुण विकसित हुए। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा राजकोट में प्राप्त की और आगे की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड गए, जहाँ से उन्होंने कानून की शिक्षा प्राप्त की। 1893 में वे वकालत के कार्य हेतु दक्षिण अफ्रीका गए, जहाँ उन्होंने भारतीयों के साथ हो रहे भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष किया। यहीं से उनके सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों का विकास हुआ।

1915 में भारत लौटने के बाद गांधी जी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे महत्त्वपूर्ण आंदोलनों का संचालन किया। उनका उद्देश्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और नैतिक उत्थान भी था। गांधी जी एक महान विचारक, समाज सुधारक और शिक्षा दार्शनिक भी थे। उन्होंने 'नई तालीम' के माध्यम से शिक्षा को आत्मनिर्भरता और नैतिक

विकास से जोड़ा। 30 जनवरी 1948 को उनकी हत्या कर दी गई, लेकिन उनके विचार आज भी विश्व को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

साहित्य समीक्षा

पूर्व शोधों में गांधी जी के शिक्षा दर्शन का सैद्धांतिक विश्लेषण अधिक मिलता है, जबकि व्यवहारिकता पर सीमित अध्ययन उपलब्ध है।

1. Basic Education (Nai Talim)– Mahatma Gandhi- यह पुस्तक गांधी जी के शिक्षा दर्शन का मूल आधार प्रस्तुत करती है। इसमें 'नई तालीम' की अवधारणा को स्पष्ट किया गया है, जिसमें शिक्षा को कार्य-आधारित, व्यावहारिक और आत्मनिर्भर बनाने पर बल दिया गया है। गांधी जी का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि शारीरिक और नैतिक विकास भी होना चाहिए। इस पुस्तक में हस्तकला को शिक्षा का केंद्र माना गया है, जिससे विद्यार्थी सीखते हुए उत्पादन भी कर सके। यह पुस्तक आज भी वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली को समझने के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।

2. Towards New Education – Mahatma Gandhi - इस पुस्तक में गांधी जी ने शिक्षा के उद्देश्यों और उसके स्वरूप पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने शिक्षा को जीवन से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया है। पुस्तक में यह बताया गया है कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना और उसमें नैतिक मूल्यों का विकास करना है। गांधी जी ने मातृभाषा में शिक्षा के महत्त्व को भी रेखांकित किया है। यह कृति शिक्षा के मानवीय और व्यावहारिक पक्ष को समझने में सहायक है और आधुनिक शिक्षा के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होती है।

3. Political Agenda of Education – Krishna Kumar - इस पुस्तक में लेखक ने औपनिवेशिक और राष्ट्रवादी शिक्षा नीतियों का विश्लेषण किया है। इसमें यह बताया गया है कि शिक्षा केवल ज्ञान का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन का साधन भी है। गांधी जी के शिक्षा दर्शन को भी इस संदर्भ में समझाया गया है, जहाँ शिक्षा को आत्मनिर्भरता और स्वदेशी भावना से जोड़ा गया है। यह पुस्तक गांधीवादी शिक्षा के व्यापक सामाजिक प्रभाव को समझने में सहायक है और शिक्षा के राजनीतिक आयामों पर प्रकाश डालती है।

4. Mahatma Gandhi: A Biography – B. R. Nanda- यह पुस्तक गांधी जी के जीवन और विचारों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करती है। इसमें उनके शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण को उनके जीवन अनुभवों के साथ जोड़ा गया है। लेखक ने दिखाया है कि गांधी जी के शिक्षा विचार उनके सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों से प्रभावित थे। यह कृति गांधी जी के व्यक्तित्व, उनके सिद्धांतों और शिक्षा दर्शन को समझने के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि उनके विचार व्यवहारिक जीवन में कैसे लागू किए गए।

5. Philosophy of Education – Ram Nath Sharma- इस पुस्तक में विभिन्न शिक्षा दार्शनिकों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, जिसमें गांधी जी के शिक्षा दर्शन को भी शामिल किया गया है। लेखक ने गांधीवादी शिक्षा के सिद्धांतों- जैसे नैतिकता, आत्मनिर्भरता और कार्य आधारित अधिगम का विश्लेषण किया है। यह पुस्तक शिक्षा दर्शन के सैद्धांतिक आधार को समझने में सहायक है और गांधी जी के विचारों को व्यापक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती है। यह शोधार्थियों के लिए एक उपयोगी संदर्भ ग्रंथ है।

शोध पत्र के उद्देश्य

1. गांधी जी के शिक्षा दर्शन के मूल सिद्धांतों का गहन अध्ययन करना।

2. 'नई तालीम' (Nai Talim) की अवधारणा एवं उसके प्रमुख तत्वों को समझना।
3. गांधी जी के शिक्षा दर्शन में निहित नैतिक, सामाजिक एवं आत्मनिर्भरता संबंधी मूल्यों का विश्लेषण करना।
4. शिक्षा के क्षेत्र में कार्य-आधारित अधिगम (Work-based learning) के महत्त्व का मूल्यांकन करना।
5. गांधीवादी शिक्षा के सिद्धांतों की व्यवहारिकता (Practical applicability) का अध्ययन करना।
6. आधुनिक शिक्षा प्रणाली में गांधी जी के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।

शोध प्रविधि

गांधी जी के शिक्षा दर्शन पर आधारित यह शोध प्रविष्टि उनके सिद्धांतों एवं उनकी व्यवहारिकता के विश्लेषण पर केंद्रित है। गांधी जी ने शिक्षा को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का माध्यम माना, जिसमें बौद्धिक, शारीरिक एवं नैतिक विकास का समावेश होता है। 'नई तालीम' के माध्यम से उन्होंने कार्य-आधारित एवं आत्मनिर्भर शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया। यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है तथा विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग करता है। शोध का उद्देश्य गांधीवादी शिक्षा की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता को समझना तथा शिक्षा प्रणाली में उसके संभावित योगदान का मूल्यांकन करना है।

शिक्षा का गांधीवादी दर्शन

बेसिक शिक्षा- बेसिक' शब्द 'बेस' से लिया गया है, जिसका अर्थ है किसी वस्तु का आधार या नींव, जिस पर पूरी वस्तु टिकी होती है। महात्मा गांधी शिक्षा की नींव को मजबूत बनाना चाहते थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने यह योजना प्रस्तुत की। यह शिक्षा योजना भारत की राष्ट्रीय संस्कृति और सभ्यता पर आधारित है। इसका उद्देश्य बच्चे को जीवन के व्यावहारिक कार्यों में अर्जित ज्ञान और कौशल का उपयोग करने में सक्षम बनाकर उसे आत्मनिर्भर बनाना है। बुनियादी शिक्षा का शिक्षा की मूलभूत आवश्यकताओं और रुचियों से गहरा संबंध है, क्योंकि बच्चा शिक्षा का केंद्र बिंदु है। इस योजना का मुख्य बिंदु कोई हस्तशिल्प है, जिसका शिक्षण छात्र को अपनी आजीविका की समस्याओं को हल करने और साथ ही अच्छे नागरिक के गुणों को विकसित करने में सक्षम बनाएगा। गांधी जी के विचार में, अच्छी शिक्षा मिट्टी की संस्कृति और जीवन में निहित होनी चाहिए, इसलिए वे शिक्षा को पर्यावरण से जोड़ने की पुरजोर वकालत करते हैं। गांधी जी की शिक्षा की परिभाषा उनके शिक्षा दर्शन की झलक देती है। तो, गांधी जी के अनुसार शिक्षा क्या है? सच्ची शिक्षा से उनका तात्पर्य बच्चे और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के सर्वांगीण विकास से है। गांधी जी के लिए केवल साक्षरता ही शिक्षा का अंतिम लक्ष्य नहीं, बल्कि आरंभ भी नहीं है। यह तो केवल एक साधन है जिसके द्वारा पुरुष और स्त्री शिक्षित हो सकते हैं। इसलिए, वे अपनी शिक्षा योजना में साक्षरता को कम महत्त्व देते हैं। गांधी जी एक व्यावहारिक शिक्षावादी दार्शनिक और पूर्णतः प्रयोगवादी थे। सत्य और शिक्षा के साथ उनके प्रयोग उनके जीवन के आदर्शों की प्राप्ति का साधन थे। अपने कई शैक्षिक प्रयोगों में उन्होंने अपने विचारों को व्यवहार में उतारने का प्रयास किया।

दर्शनशास्त्र का उद्देश्य आदर्श समाज के विकास और स्थापना की वास्तविकता को प्राप्त करना था। गांधी जी सत्य और अहिंसा पर आधारित एक नई सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना चाहते थे। यह केवल एक मौन सामाजिक क्रांति के माध्यम से ही संभव हो सकता है। उनका मानना था कि शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन इस मौन सामाजिक क्रांति को साकार करने में सहायक हो सकता है। बुनियादी शिक्षा योजना मात्र तकनीक नहीं है, बल्कि शिक्षा के प्रति एक नई भावना और दृष्टिकोण का प्रतीक है।

बेसिक शिक्षा की रूपरेखा

1. प्रारम्भ में बेसिक शिक्षा निम्नलिखित रूप में स्वीकार की गई थी-
2. 7 से 14 आयु वर्ग के सभी बच्चों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की जाए।
3. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
4. सम्पूर्ण शिक्षा किसी आधारभूत शिल्प अथवा उद्योग पर आधारित हो।
5. शिल्प का चुनाव बच्चों की योग्यता और क्षेत्रीय आवश्यकताओं के आधार पर किया जाए।
6. बच्चों द्वारा निर्मित वस्तुओं का उपयोग हो और उनसे आर्थिक लाभ किया जाए, स्कूलों का व्यय पूरा किया जाए।
7. शिल्पों की शिक्षा इस प्रकार दी जाए कि उससे बच्च्ये जीविकोपार्जन कर सकें।

आत्मनिर्भरता- इस योजना के आत्मनिर्भर पहलू को दो तरह से समझा जा सकता है- (क) ऐसी शिक्षा जो व्यक्ति को बाद के जीवन में आत्मनिर्भर बनने में मदद करे, (ख) ऐसी शिक्षा जो स्वयं आत्मनिर्भर हो। गांधी जी का मूल विचार यह था कि यदि चुने गए शिल्प को कुशलतापूर्वक या पूरी तरह से सिखाया जाए, तो विद्यालय शिक्षकों के वेतन का खर्च वहन कर सकेगा। साथ ही उनका उद्देश्य श्रम को गरिमा प्रदान करना और विद्यालय छोड़ने के बाद छात्र के लिए एक साधारण और ईमानदार आजीविका सुनिश्चित करना था। शिक्षा का माध्यमः वर्धा में अखिल भारतीय राष्ट्रीय सम्मेलन में अपनाए गए प्रस्तावों में-से एक यह था कि शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जानी चाहिए। इस संबंध में, जाकिर हुसैन समिति का यह अवलोकन था कि मातृभाषा का उचित शिक्षण सभी शिक्षा की नींव है। प्रभावी ढंग से बोलने और सही और स्पष्ट रूप से पढ़ने और लिखने की क्षमता के बिना, कोई भी व्यक्ति लेखन में सटीकता विकसित नहीं कर सकता। विचार या विचारों की स्पष्टता। इसके अलावा, यह बच्चे को अपने लोगों के विचारों, भावनाओं और आकांक्षाओं की समृद्ध विरासत से परिचित कराने का एक साधन है। नागरिकता का आदर्शः मूल योजना की एक और महत्त्वपूर्ण विशेषता नागरिकता का आदर्श है जो इसमें निहित है। इसका उद्देश्य भावी नागरिकों को एक सहयोगात्मक समुदाय में व्यक्तिगत विकास, गरिमा, दक्षता और सामाजिक सेवाओं की गहरी समझ प्रदान करना है। जाकिर हुसैन समिति ने परिकल्पना की थी कि नई पीढ़ी को कम-से-कम अपनी समस्याओं, अधिकारों और दायित्वों को समझने का अवसर अवश्य मिलना चाहिए। नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यों के बुद्धिमानीपूर्ण प्रयोग के लिए न्यूनतम शिक्षा सुनिश्चित करने हेतु एक पूर्णतः नई प्रणाली आवश्यक है।

शिक्षा के अन्य पक्ष- जन शिक्षा गाँधी जी के समय भारत में लगभग 13% लोग साक्षर थे। विद्यालयी शिक्षा के अभाव में उनमें न आत्मविश्वास था और न जागरूकता थी। तब हम प्रगति कैसे करते। गाँधी जी ने अशिक्षा के अभिशाप से बचने के लिए जन शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा और स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया। जन शिक्षा दो रूपों में होगी एक तो बालकों को शिक्षित करने के लिए इन्होंने बेसिक शिक्षा योजना प्रस्तुत की। यह शिक्षा की राष्ट्रीय योजना थी जिसमें 7 वर्ष से 14 वर्ष तक के बालकों की अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा पर बल दिया गया था। इस शिक्षा को गाँधी जी ने हस्त कौशलों पर केन्द्रित किया, एक तो इसलिए कि हस्त कौशल हमारे जीवन के आधारभूत कार्य हैं और दूसरे इसलिए कि इनके द्वारा विद्यालयों का खर्च निकल सकता है और यह शिक्षा सबके लिए सुलभ की जा सकती है। जन शिक्षा के प्रसार के लिए गाँधी जी का दूसरा कदम था प्रौढ़ शिक्षा की व्यवस्था। इनके विचार से अशिक्षित प्रौढ़ों की शिक्षा का उत्तरदायित्व समाज का है। इन्होंने सामाजिक नेताओं, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों का, प्रौढ़ शिक्षा की पाठ्यचर्या में साक्षरता के साथ-साथ सफाई, स्वास्थ्य रक्षा, बौद्धिक विकास, नैतिक विकास, उद्योग, व्यवसाय, समाज कल्याण और संस्कृति से सम्बन्धित कार्यों को रखा था।

स्त्री शिक्षा- गाँधी जी स्त्री को ईश्वर की श्रेष्ठतम रचना मानते थे। उन्होंने इस बात को स्पष्ट किया कि यद्यपि पुरुष और स्त्री का कार्य क्षेत्र थोड़ा भिन्न होता है लेकिन उनकी सांस्कृतिक आवश्यकताएँ समान होती हैं इसलिए दोनों को अपने-अपने विकास के समान अवसर देने चाहिए। मुख्य रूप से स्त्री को पत्नी, माता और समाज के निर्माता के रूप में कार्य करना होता है। पहले दो कार्यों में वह पुरुष से भिन्न अवश्य होती है पर अपने तीसरे उत्तरदायित्व का निर्वाह करने के लिए उसे अपनी सभ्यता और संस्कृति का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए। परन्तु किसी भी स्थिति में वे स्त्रियों को संगीत और नृत्य से दूर रखना चाहते थे। उनका मत था कि ये क्रियाएँ वासना को बढ़ावा देती हैं। वे स्त्री और पुरुष की शिक्षा में केवल इतना ही अन्तर करते थे कि स्त्रियों को गृह कार्य की अतिरिक्त शिक्षा दी जाए। स्त्री को समाज में बराबर का स्थान देकर उसकी शिक्षा की व्यवस्था कर गाँधी जी ने समाज का बड़ा उपकार किया है।

सह शिक्षा- गाँधी जी ने लड़के-लड़कियों को एक साथ रखकर पढ़ाने के प्रयोग किए थे और उनके आधार पर सह शिक्षा की सम्भावना स्वीकार की थी। गाँधी जी के अनुसार प्राईमरी और उच्च स्तर पर सह शिक्षा की व्यवस्था की जा सकती है परन्तु किशोरावस्था पर यह उचित नहीं होती। अपने इस मत को व्यक्त करते समय ये प्रत्येक समाज को यह छूट देते हैं कि वह अपने पर्यावरण को दृष्टि में रखते हुए सह शिक्षा को स्वीकार अथवा अस्वीकार करने के लिए स्वतन्त्र होना चाहिए। इस प्रकार सह शिक्षा के सम्बन्ध में गाँधी जी सामाजिक पर्यावरण पर निर्भर करते थे।

धर्म शिक्षा- गाँधी जी धार्मिक विचारधारा के व्यक्ति थेः प्रार्थना भजन और गीता पाठ इनकी दैनिक क्रियाओं के अंग थे। परन्तु विद्यालयों में किसी धर्म विशेष की शिक्षा देने के ये पक्ष में नहीं थे। उन्हें इस बात का भय था कि विभिन्न धर्मों के इस देश में धार्मिक शिक्षा देने से साम्प्रदायिकता और अधिक बढेगी। अतः इन्होंने सभी धर्मों के सामान्य सिद्धान्तों और नैतिक शिक्षा को ही पाठ्यचर्या में स्थान दिया। वे सत्य को ईश्वर मानते थे। इस सत्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य की शिक्षा पर सबसे अधिक बल दिया है। इसके साथ-साथ उन्होंने प्रेम की उपयोगिता को भी स्वीकार किया है। मानव सेवा को ये सबसे बड़ा धर्म मानते थे। उनके विचार से बच्चों को मानव सेवा की ओर प्रवृत्त करना ही वास्तविक धर्म शिक्षा है।

राष्ट्रीय शिक्षा- अंग्रेजों ने हमारे लिए जिस शिक्षा का विधान किया था उसके दो ही उद्देश्य थे- पहला शासन कार्य में सहयोग करने हेतु अंग्रेजी पढ़े-लिखे बाबू तैयार करना और दूसरा ऐसे व्यक्तियों का निर्माण जो तन से भारतीय हों पर मन से अंग्रेज परस्त हों। इसकी पाठ्यचर्या भी बड़ी दोषयुक्त थी, इसका भारतीय जन जीवन एवं संस्कृति से कोई सम्बन्ध नहीं था। पाठ्य विषयों में सबसे अधिक बल अंग्रेजी भाषा और साहित्य को दिया जाता था और अंग्रेजी भाषा ही उस समय शिक्षा का माध्यम थी और यह शिक्षा भी कुछ बड़े नगरों में ही सुलभ थी। इसके अतिरिक्त यह व्यय साध्य भी थी। परिणामतः उच्च वर्ग के लोग ही इसे प्राप्त कर सकते थे और दुख की बात तो यह है कि इस शिक्षा को प्राप्त करने के बाद लोग अशिक्षित लोगों का शोषण करते थे।

व्यावहारिकता में लागू

गांधी जी ने अपने शैक्षिक दर्शन को केवल सिद्धांतों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे व्यवहार में लागू करने का निरंतर प्रयास किया। उन्होंने 'नई तालीम') या बुनियादी शिक्षा के माध्यम से एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित की, जिसमें सीखने की प्रक्रिया को जीवन और कार्य से जोड़ा गया। उनके अनुसार शिक्षा का केंद्र हस्तकला या उत्पादक कार्य होना चाहिए, ताकि विद्यार्थी सीखते हुए कार्य करें और कार्य करते हुए सीखें। गांधी जी ने वर्धा शिक्षा योजना (1937) के माध्यम से अपने विचारों को संस्थागत रूप दिया। इस योजना के अंतर्गत विद्यालयों में चरखा कातना, बुनाई, कागज बनाना, कृषि आदि गतिविधियों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया। इससे विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता, श्रम के प्रति

सम्मान और व्यावहारिक कौशल का विकास हुआ। इसके अतिरिक्त, उन्होंने मातृभाषा में शिक्षा देने पर जोर दिया, जिससे शिक्षा अधिक सहज और प्रभावी बन सके। उन्होंने शिक्षा में नैतिक मूल्यों- जैसे सत्य, अहिंसा और अनुशासन को अनिवार्य माना और अपने आश्रमों में इन सिद्धांतों का पालन कर उदाहरण प्रस्तुत किया। गांधी जी ने शिक्षा को समाज से जोड़ते हुए उसे सामाजिक सेवा का माध्यम भी बनाया। उनके आश्रमों में विद्यार्थी स्वच्छता, श्रम और सामुदायिक जीवन का अभ्यास करते थे, जिससे उनमें सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती थी। इस प्रकार, गांधी जी ने अपने शिक्षा दर्शन को व्यावहारिक रूप में लागू करके यह सिद्ध किया कि शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है, जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर, नैतिक और समाजोपयोगी बनाती है।

NEP 2020 और कौशल आधारित शिक्षा में गांधीवादी दृष्टिकोण-

गांधी जी का शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण अत्यंत व्यावहारिक, नैतिक और जीवनोपयोगी था, जो आज की नई शिक्षा नीति 2020 और स्किल-आधारित शिक्षा के साथ गहराई से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। गांधी जी "नयी तालीम" (Basic Education) के माध्यम से ऐसी शिक्षा प्रणाली चाहते थे जिसमें बौद्धिक विकास के साथ-साथ हाथ के काम (कौशल) को भी समान महत्त्व दिया जाए। उनका मानना था कि शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाने वाली होनी चाहिए। नई शिक्षा नीति 2020 भी इसी विचार को आगे बढ़ाती है। इसमें विद्यार्थियों के समग्र विकास पर जोर दिया गया है, जिसमें व्यावसायिक शिक्षा कौशल विकास, और अनुभवात्मक अधिगम को विशेष स्थान दिया गया है। गांधी जी के अनुसार, "कर्म ही शिक्षा का आधार होना चाहिए", और NEP 2020 में कक्षा 6 से ही स्किल-आधारित शिक्षा तथा इंटर्नशिप की व्यवस्था इसी सोच को दर्शाती है।

गांधी जी आत्मनिर्भरता के प्रबल समर्थक थे। वे चाहते थे कि विद्यार्थी अपने कौशल के माध्यम से रोजगार सृजन कर सकें। इसी प्रकार, NEP 2020 भी "आत्मनिर्भर भारत" की अवधारणा को बढ़ावा देते हुए विद्यार्थियों को रोजगारोन्मुखी कौशल प्रदान करने पर बल देती है। अतः स्पष्ट है कि गांधी जी का शिक्षा दर्शन जिसमें श्रम, नैतिकता, और आत्मनिर्भरता का समावेश है। आज की स्किल-आधारित शिक्षा और नई शिक्षा नीति 2020 के मूल में निहित है। यह नीति गांधीवादी विचारों का आधुनिक रूप प्रस्तुत करती है, जो शिक्षा को जीवन से जोड़ने का कार्य करती है।

गांधी जी के दार्शनिक शिक्षा की चुनौतियाँ-

गांधी जी के शिक्षा दर्शन, विशेषकर 'नई तालीम', को व्यवहार में लागू करने में अनेक चुनौतियाँ सामने आईं। गांधी जी स्वयं मानते थे कि उनका मॉडल आदर्श तो है, पर उसे व्यापक स्तर पर लागू करना आसान नहीं है। सबसे बड़ी चुनौती पारंपरिक शिक्षा प्रणाली का प्रभुत्व था, जो परीक्षा, डिग्री और नौकरी-केंद्रित बनी हुई थी। ऐसे में कार्य-आधारित और नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा को स्वीकार करना कठिन रहा। दूसरी प्रमुख समस्या संसाधनों और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी थी। नई तालीम के सफल क्रियान्वयन के लिए ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता थी, जो स्वयं कौशलयुक्त और गांधीवादी मूल्यों से प्रेरित हों, लेकिन ऐसे शिक्षकों की उपलब्धता सीमित थी। इसके अलावा, समाज में श्रम के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण भी एक बाधा बना। हस्तकला और श्रम को शिक्षा का केंद्र बनाने के विचार को कई लोगों ने निम्न स्तर का माना, जिससे इसकी स्वीकृति प्रभावित हुई। आधुनिक तकनीकी और औद्योगिक विकास के युग में गांधी जी की शिक्षा प्रणाली को समकालीन आवश्यकताओं के साथ संतुलित करना भी एक चुनौती रही। इस प्रकार, गांधी जी ने स्वयं इन चुनौतियों को स्वीकार करते हुए यह स्पष्ट किया कि उनके शिक्षा दर्शन को सफल बनाने के लिए सामाजिक दृष्टिकोण और शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन आवश्यक है।

गांधी जी का शिक्षा दर्शन आज भी प्रासंगिक-

महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन आज भी अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं बल्कि व्यक्ति के समग्र विकास पर बल देता है। गांधी जी ने "नैतिकता, श्रम और आत्मनिर्भरता" को शिक्षा का आधार माना। वर्तमान समय में, जब शिक्षा प्रणाली अधिकतर परीक्षा और रोजगार केंद्रित हो गई है, गांधी जी का दृष्टिकोण संतुलन प्रदान करता है। गांधी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास भी होना चाहिए। आज के संदर्भ में यह विचार महत्त्वपूर्ण है क्योंकि विद्यार्थियों में तनाव, प्रतिस्पर्धा और नैतिक मूल्यों की कमी देखी जा रही है। उनकी 'नैतिक शिक्षा' पर जोर आज के समाज में चरित्र निर्माण और सामाजिक जिम्मेदारी को मजबूत करने में सहायक हो सकता है।

उन्होंने 'कार्य आधारित शिक्षा' या 'बेसिक एजुकेशन' (नयी तालीम) का समर्थन किया, जिसमें सीखने के साथ-साथ कोई व्यावसायिक कौशल भी विकसित किया जाता है। आज के युग में जब स्किल डेवलपमेंट और रोजगारपरक शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है, गांधी जी का यह सिद्धांत और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। इससे बेरोजगारी की समस्या को कम करने में भी सहायता मिल सकती है। इसके अतिरिक्त, गांधी जी ने मातृभाषा में शिक्षा देने का समर्थन किया, जो आज भी शिक्षा को अधिक प्रभावी और सुलभ बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नई शिक्षा नीति 2020 में भी इस विचार को अपनाया गया है। अतः स्पष्ट है कि गांधी जी का शिक्षा दर्शन आज भी आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए मार्गदर्शक है। यह न केवल ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि एक जिम्मेदार, आत्मनिर्भर और नैतिक नागरिक के निर्माण में सहायक सिद्ध होता है।

निष्कर्ष

गांधी जी का शिक्षा दर्शन आधुनिक शिक्षा को अधिक मानवीय बना सकता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली उपभोक्तावाद, भौतिकवाद, अनुचित प्रतिस्पर्धा और हिंसा को बढ़ावा देने का साधन बन गई है। नैतिक मूल्यों के क्षरण, युवा अशांति, पारिस्थितिक हिंसा और समाज में बढ़ते संशय ने भारतीय स्वदेशी विरासत और जीवनशैली के पुनरुद्धार की आवश्यकता को उजागर किया है। गांधी जी ने पचास वर्ष पहले ही ऐसे संभावित घटनाक्रमों का अनुमान लगा लिया था और बुनियादी शिक्षा के एक नए विकल्प की वकालत की थी (शाह, 2017)। बेशक, शिल्प के माध्यम से सीखने पर जोर बरकरार रखा जा सकता है, लेकिन समय के अनुरूप इसमें कुछ बदलाव किए जा सकते हैं। उनके शैक्षिक विचार सत्य, प्रेम, आत्म-बलिदान, चरित्र निर्माण और अहिंसा के शाश्वत सिद्धांतों पर आधारित हैं, इसलिए वे कभी भी अपनी प्रासंगिकता नहीं खोएंगे। आवश्यकता केवल उनके विचारों को वर्तमान परिदृश्य के अनुरूप ढालने की है। जब पर्यावरण चेतना, नैतिक मूल्य, अंतर्वैयक्तिक कौशल, समुदाय और समाज उन्मुख जागरूकता को शिक्षा के माध्यम से युवाओं में समाहित किया जाएगा, तभी देश का वास्तविक विकास संभव हो पाएगा।

संदर्भ सूची

1. गांधी, एम. के. (1962). टुवर्ड्स न्यू एजुकेशन. अहमदाबाद: नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, पृ. 34।
2. कुमार, कृष्ण (2005). पॉलिटिकल एजेंडा ऑफ एजुकेशन: ए स्टडी ऑफ कॉलोनियलिस्ट एंड नेशनलिस्ट आइडियाज. नई दिल्ली: सेज प्रकाशन, पृ. 78।
3. नंदा, बी. आर. (1995). महात्मा गांधी: ए बायोग्राफी. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, पृ. 21।
4. शर्मा, रामनाथ (2010). फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन. नई दिल्ली: अटलांटिक प्रकाशन, पृ. 151।
5. एनसीईआरटी (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005. नई दिल्ली: एनसीईआरटी, पृ. 25।

6. सिंह, वाई. (2018). गांधीवादी शिक्षा दर्शन और उसकी प्रासंगिकता. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन ह्यूमैनिटीज, खंड 6(2), पृ. 45–52।
7. पटेल, आर. (2017). नई तालीम और आधुनिक शिक्षा प्रणाली. जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, खंड 4(1), पृ. 23–30।
8. वर्मा, एस. (2019). वर्तमान युग में गांधीवादी शिक्षा की प्रासंगिकता. एजुकेशनल रिव्यू, पृ. 60–68।
9. गांधी, एम. के. (1955/1969). सत्य ही ईश्वर है (संकलन: आर. के. प्रभु). अहमदाबाद।
10. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (1953). गांधीवादी दृष्टिकोण एवं तकनीकें. दिल्ली।
11. गांगुली, बी. एन. (1973). गांधी का सामाजिक दर्शन: परिप्रेक्ष्य और प्रासंगिकता. दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
12. हक्सर, विनीत (1976). दबावपूर्ण प्रस्ताव. राजनीतिक सिद्धांत, खंड 4, अंक 1, फरवरी।
13. सविनय अवज्ञा पर रावल और गांधी (1976). जांच, खंड 19, संख्या 2।
14. हिक, जॉन (1977). द मिथ ऑफ गॉड इनकार्नेट. लंदन: एस.सी.एम. प्रेस।
15. हिरियाना, एम. (1973). आउटलाइन्स ऑफ इंडियन फिलॉसफी. बॉम्बे: जॉर्ज एलन एंड अनविन।
16. हिरियाना, एम. (1973). द एसेंशियल्स ऑफ इंडियन फिलॉसफी. बॉम्बे: जॉर्ज एलन एंड अनविन।
17. हक्सले, एल्डस (1941). लक्ष्य और साधन. लंदन: चैटो एंड विंडस।
18. अय्यर, राघवन (वर्ष अनुपलब्ध). महात्मा गांधी के नैतिक और राजनीतिक विचार. ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस।
19. सेन, एन. एन. (सम्पा.) (1965). गांधी के गौरवशाली विचार. नई दिल्ली।
20. प्रभु, आर. के. एवं राव, यू. आर. (सम्पा.) (1945–46). महात्मा गांधी का मन. ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस।
21. हिंगोरानी, आनंद टी. (सम्पा.) (1961). मेरा जीवन दर्शन. बॉम्बे।
22. गांधी, एम. के. (1962). शिक्षा की समस्या. अहमदाबाद: नवजीवन प्रेस।
23. वॉकर, रॉय (सम्पा.) (1943). गांधी का ज्ञान. कलकत्ता।